3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली
भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र

भोली सी गौरैया

बड़ी सलोनी एक चिरैया
भोली-भोली सी गौरैया।
कभी किचन में
कभी मुँडेरे,
बैठ-बैठ कर
रोज सवेरे
चीं-चीं-चीं-चीं बोल-बोल कर
मुझे जगाती जागो भैया !
धीरे -से-
आंगन में आती,
दाने चुन-चुन
कर उड़ जाती -
नाच थिरक खिड़की के ऊपर
करने लगती -ता-ता थैया।
नीबू की डाली-डाली पर,
गेहूँ की सुन्दर
बाली-पर
गाती मीठे-मीठे स्वर में
फुदक-फुदक कर छंद सवैया।

छोटे परदे पर
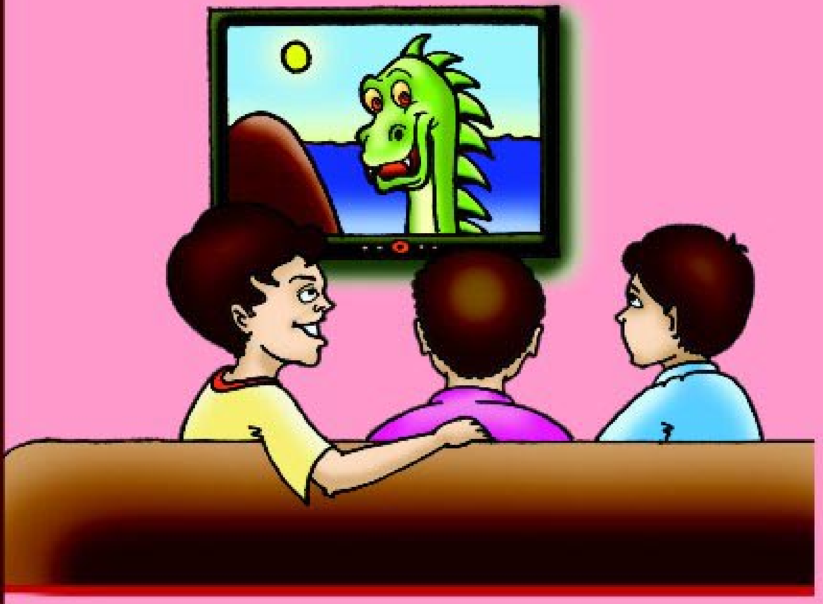
यह है अपना टी.वी., इसके छोटे परदे पर
कभी दिखाई देते जंगल, कभी दिखाई देत खेत
कभी दिखता बड़ा मरुस्थल, दूर-दूर तक फैली रेत।
कभी समंदर लहराता है, नदिया बहती है हर-हर।
मुँह फैलाए खड़ा सामने, शेर कभी गुर्राता है,
आगे बढ़ता नभ,तब लगता, पास हमारे आता है।
यह डरावना दृश्य देखकर, हम तो सहसा जाते डर।
पेड़ों की शाखाओं पर फिर, चिड़ियाँ चूँ-चूँ करती हैं,
उड़ उड़ कर वे नील गगन में, हम सब का मन हरती हैं।
देख-देख टी.वी. पर यह सब, मन खुशियों से जाता भर।